जनवरी 2026 अंक में प्रकाशित

आपको याद दिलाने के लिये

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह जनवरी 2026 में प्रकाशित है

विजय गणपति साधना

माघ शुक्ल पक्ष जया एकादशी - 29 जनवरी 2026
फाल्गुन कृष्ण पक्ष विजया एकादशी - 13 फरवरी 2026

विघ्नों के समापन के लिये ही शास्त्रों में विघ्नहर्ता विजय गणपति की साधना का उल्लेख आया है। विजय गणपति बुद्धि से भ्रम को ज्ञान में आलस्य को चेतना में बदल देते है। विघ्न चाहे बाहरी हो या आन्तरिक इनके समापन के बिना विजय, उद्देश्य प्राप्ति संभव ही नहीं है।

विजय स्वरूप गणपति का यह स्वरूप तीव्र और प्रचण्ड शत्रुहंता होता है। जीवन में कभी भी किसी भी क्षण, किसी भी मोड़ पर कोई भी शत्रु खड़ा हो सकता है। इन पर विजय प्राप्त करने के लिए सदैव आयुधों से सन्नद्ध रहना चाहिए। जिस जीवन में शत्रु बाधा न हो, वह शौर्यपूर्ण जीवन नहीं कहा जा सकता। शत्रु हो और उसका पौरुष के साथ मुकाबला किया जाए, यही इस साधना का मुख्य पक्ष है। यदि इन शत्रुओं का आपको सामना करना है, तो निश्चित रूप से यह साधना आपके लिए उपयोगी है, क्योंकि इस साधना को सम्पन्न कर आप भविष्य में आने वाली शत्रु बाधा से सुरक्षा का पूर्व उपाय कर लेते हैं और दुर्दान्त शत्रुओं पर निश्चित रूप से विजय प्राप्त कर सकते हैं।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 650/-
(जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 11)

विघ्नहर्ता विजय गणपति दीक्षा

माघ शुक्ल पक्ष जया एकादशी - 29 जनवरी 2026
फाल्गुन कृष्ण पक्ष विजया एकादशी - 13 फरवरी 2026

कर्म फल की सिद्धि में सबसे बड़ा संकट विघ्न बाधा ही है, जिसका विघ्नहर्ता गणपति मूल रूप से अंत कर देते है, तदुपरांत हमारे जीवन में विजय भाव का उदय होता है इसीकारण भगवान गणपति को विघ्नहर्त्ता मंगलकारी देव कहा गया है जो विघ्नों का विनाश कर जीवन में पूर्ण विजय प्रदान करते है।

कर्म एक सतत् क्रिया है और बुद्धि द्वारा इन कर्मों को सही मार्ग, सही दिशा में धकेला जाता है। बुद्धि कर्मों की पूर्णता का ईंधन भी है। भगवान गणपति की कृपा से बुद्धियुक्त होकर सही दिशा में किया गया कर्म साधक के जीवन में शुभ-लाभ, ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक होता है।

साधक को भगवान गणपति की कृपा प्राप्त कर अपने कर्मों, उद्देश्यों, लक्ष्यों को सही दिशा में गतिमान करना चाहिये, इस हेतु साधक को सद्गुरुदेव से कृपा स्वरूप 'विघ्नहर्ता विजय गणपति दीक्षा' प्राप्त करनी चाहिये जिससे उसे उसके कर्म का श्रेष्ठ यथोचित फल प्राप्त हो।

- विघ्नहर्ता विजय गणपति दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 13)

महाशिवरात्रि पूजन अभिषेक

(महाशिवरात्रि - 15 फरवरी 2026)

शिव अभिषेक केवल एक पूजा-विधि नहीं है, बल्कि यह शक्ति को शिव से जोड़ने का मार्ग है। अभिषेक का अर्थ है अन्तर में जल रही तपन को शांत करना, मन को निर्मल बनाना, और अहंकार को पिघलाना।

महाशिवरात्रि पर्व पर विशेष रूप से पूजा, साधना, अभिषेक सम्पन्न किया जाता है। महशिवरात्रि पर्व पर पूजा, साधना, अभिषेक प्राण प्रतिष्ठा युक्त साधना सामग्री और शास्त्रों के विधानानुसार सम्पन्न करना चाहिये। महाशिवरात्रि सृष्टि का सबसे बड़ा पर्व है, शक्ति और शिव के समागम का पर्व है।

शिवरात्रि मिलन का प्रतीक है, जब शिव शक्ति का वरण करते हैं और शक्ति यह अनुभव करती है कि उनका शिव उससे दूर नहीं, उसी के भीतर स्थित है। शक्ति कर्म में अग्रसर हो और शिव चित्त में स्थित हों। जीव का लक्ष्य शिव है और शिवरात्रि उस लक्ष्य की स्मरण-रात्रि है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 17)

अर्धनारीश्वर शिव साधना

(फाल्गुन कृष्ण पक्ष - 2 फरवरी 2026 से 17 फरवरी 2026)

शिव चेतना और प्रकृति शक्ति है, दोनों अलग नहीं है, बल्कि एक ही सत्ता के दो पहलू है। सृष्टि के विकास के लिये चेतना और शक्ति प्रत्येक जीवन में होनी आवश्यक है। भगवान शिव का अर्धनारीश्वर स्वरूप चेतना और शक्ति के संगम का स्वरूप है, जीवन की पूर्णता का स्वरूप है जो यह स्पष्ट करता है कि प्रत्येक पुरुष में स्त्री तत्व है और प्रत्येक स्त्री में पुरुष तत्व विद्यमान है।

सृष्टि शिव और शक्तिमय है, शिव और शक्ति एकीकृत होकर ही संसार को पोषित करते है। शिव और शक्ति के एकीकृत स्वरूप से ही मानव जीवन का कल्याण होता है। शिव और शक्ति का अद्धनारीश्वर स्वरूप प्रत्येक दृष्टि से जीवन का कल्याणकारी स्वरूप है। अर्धनारीश्वर स्वरूप में शिव साधक की कामनाओं की पूर्ति करते है, उसके ज्ञान में वृद्धि करते है, आध्यात्मिक उन्नति में वृद्धि करते है। अर्धनारीश्वर शक्ति साधना साधक को भय मुक्त कर, लघु से विराट् की यात्रा सम्पन्न कराती है। फाल्गुन कृष्ण पक्ष में गृहस्थ साधकों व्दारा शिव और शक्ति के सायुज्य अर्धनारीश्वर साधना सम्पन्न करने से जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 750/- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 21)

ललिताम्बा साधना

(माघ पूर्णिमा - ललिताम्बा सिद्धि दिवस - 1 फरवरी 2026)

यह मनुष्य का सौभाग्य ही है कि वह भगवती ललिताम्बा सिद्धि की ओर प्रवृत्त हो पाए, क्योंकि अन्य देवियों की अपेक्षा भगवती ललिताम्बा की साधना अपने आप में उत्कृष्ट और श्रेयस्कर मानी जाती है।

ललिताम्बा साधना सम्पन्न कर इसे सिद्ध करने पर शत्रु स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं और जीवन में उन्हें किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं रहता। यह साधना बुढ़ापे को समाप्त कर पुनः यौवन प्रदान करने में समर्थ है। ललिताम्बा साधना श्रृंगार तत्व और तेज तत्व का संयुक्त रूप है। ललिता की आठ शक्तियां - प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नंदिनी, सुप्रभा एवं विजया साधक को तेजस्विता, पुरुषार्थ एवं सौन्दर्य प्रदान करने वाली हैं। ललिताम्बा साधना के माध्यम से व्यक्ति अपने पूर्व जन्म एवं इस जन्म के दोषों को जानकर, उनमें रह गई त्रुटियों का निराकरण कर अभाव मुक्त जीवन जी सकता है। ललिताम्बा मंत्र जप से शून्य सिद्धि प्राप्त होती है और व्यक्ति सिद्ध योगी भी बन जाता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 480/- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 27)

हीरक खप्पर साधना

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
2 फरवरी 2026 से 17 फरवरी 2026

गृहस्थ जीवन कर्म के साथ, भोग, योग और मुक्ति के लिये प्राप्त हुआ है। प्रत्येक मनुष्य की कामना होती है कि वह सुख पूर्वक गृहस्थ जीवन का पालन करें और ईश्वर से जो प्राप्त हुआ है उसे अपनी कर्म शक्ति द्वारा और अधिक विस्तारित करें। गृहस्थ जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप निर्धनता, दरिद्रता ही है। यह भी सत्य है कि सन्तोषी जीवन जीने के लिये उचित मात्रा में धन आवश्यक है। धन को जीवन की प्रवाह शक्ति कहा गया है। जब तक जीवन में धन का प्रवाह रहता है व्यक्ति सन्तुष्ट और आनन्दमय रहता है। धन ऐसी शक्ति है जो आपको शांति और संतोष भी देती है।

हर गृहस्थ चाहता है कि उसके पास प्रचुर मात्रा में धन, सम्पति अवश्य हो और उसका निरन्तर प्रवाह भी हो। जिससे वह परिवार का उचित पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा कर सके और साथ ही दान, धर्म, पुण्य, समाज सेवा और दूसरों को सहयोग भी दे सके।

गृहस्थजनों के जीवन में धन-धान्य और लक्ष्मी के लिये तथा जीवन में दारिद्रय नाश के लिये ही महर्षि वशिष्ठ और उनकी धर्मपत्नी अरुंधति ने शिव और शक्ति की विशेष साधना 'हीरक खप्पर' गृहस्थ व्यक्तियों को प्रदान किया।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 31)

महामृत्युंजय अनुष्ठान

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
2 फरवरी 2026 से 17 फरवरी 2026

महामृत्युञ्जय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है। इस अनुष्ठान में अकाल मृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव है और जिस व्यक्ति के जीवन में अकाल मृत्यु या बालघात योग हो, उसके लिए तो महामृत्युञ्जय विधान सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युञ्जय मंत्र अपने आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है तथा सभी ऋषि-मुनियों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह मंत्र अपने आप में महत्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है। धर्म शास्त्रों में मंत्र शक्ति से रोग निवारण एवं मृत्यु-भय दूर करने तथा अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं, उनमें महामृत्युञ्जय साधना का स्थान सर्वोच्च है।

प्रत्येक साधक को वर्ष में कई-कई बार अपने और अपने परिवार के लिये यह महामृत्युंजय अनुष्ठान अवश्य सम्पन्न करना चाहिये। महामृत्युंजय अनुष्ठान केवल बाधाओं की समाप्ति का स्वरूप नहीं है यह जीवन में रसधार निरन्तर बहती रहे उसका भी स्वरूप है। सरस, आनन्द और प्रेम से युक्त जीवन ही शिव की कृपा का स्वरूप है। नियमित रूप से सम्पन्न करें, महामृत्युंजय मंत्र जप अनुष्ठान।

- (जनवरी 2026 पृष्ठ सं. 55)